B- 4
L- 19
Indian Society

धार्मिक रूढ़िवाद का दुष्परिणाम

1. सांप्रदायिक तनाव एवं संघर्ष में वृद्धि फलतः सामुदायिक सौहार्द्रता एवं राष्ट्रवाद की भावना कमजोर
2. विवेकसम्मत एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विरोध फलः धर्मनिरपेक्षीकरण एवं आधुनिकीकरण की प्रतिक्रिया बाधित / धीमी।
3. धार्मिक आतंकवाद का उद्भव
4. समकालीन विश्व की शांति व्यवस्था भंग

धार्मिक रूढ़िवाद का कारण

1. धर्म आधारित नृजातीय केन्द्रीयता की भावना एवं इसकी प्रतिक्रिया
2. रूढ़िवादी व्यक्तियों एवं संगठनों की नकारात्मक भूमिका।
3. विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा सत्ता प्राप्ति हेतु जनता को लामबंद करने हेतु इसका प्रयोग
4. राष्ट्रवाद के विकास के लिए धर्म का प्रयोग

5. वैश्वीकरण जनित पहचान का संकट एवं इसके समाधान हेतु लोगों द्वारा धर्म की ओर उन्मुखता में वृद्धि।

6. विभिन्न व्यक्तियों एवं समाज के लोगों के द्वारा संगठन या दबाव समूह के आधार के रूप में धर्म का प्रयोग

मूल्यांकन एवं सुझाव

1. तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अधिकाधिक प्रसार किया जाए।

2. धर्म निरपेक्षता को एक मजबूत विचारधारा के रूप में स्थापित किया जाए।

3. सभी धर्मों को अधिकाधिक तार्किक एवं व्यवहारिक बनाया जाए (धर्म का निरपेक्षीकरण)

4. विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य सांस्कृतिक अंतःक्रिया को प्रोत्साहित कर उन्हें एक-दूसरे के निकट लाया जाए

5. विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य विद्यमान विषमता को समाप्त किया जाए।

6. धर्मांध लोगों एवं संगठनों तथा राजनीतिक दलों की समाज विरोधी गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाए।

7. संचार साधनों, NGO's एवं युवाओं को इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निर्वहन हेतु प्रेरित किया जाए।

संभावित प्रश्न

POF Note

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद का अर्थ

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद के लक्षण

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद के सामाजिक परिणाम

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद के कारण

समीक्षा एवं निष्कर्ष

⇓

PDF Notes

धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद का अर्थ

⇓

PDF Notes

भारत में धर्म का राजनीतिकरण

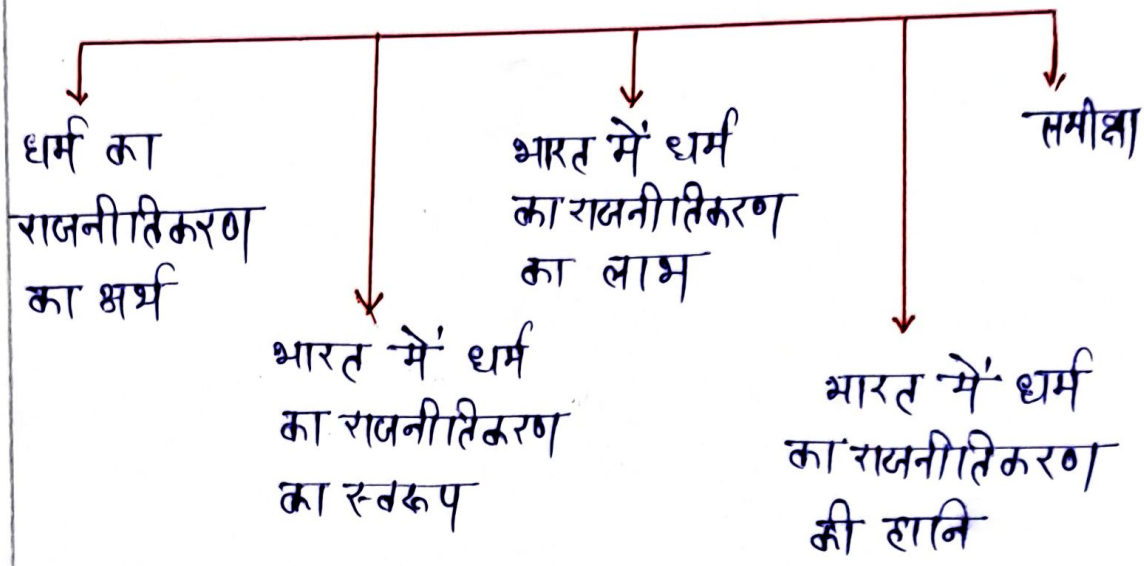

PDF Notes